अचीवर | सरस्वती की हकीकत को सामने लाने में इन्होंने किया पर्दे के पीछे काम

किसी ने छोड़ी नौकरी तो किसी ने पारिवारिक मोह

पोपीनपंवार | यमुनानगर

- देशभर के बुद्धिजीवी लगे हैं सरस्वती को जीवित करने में, इनमें आईएएस व सीनियर वैज्ञानिक भी शामिल

सरस्वती नदी को पुनर्जीवित करने के लिए उसमें यमुनानगर ही नहीं पूरे देश के जाने - माने लोगों का योगदान रहा। कुछ शख्सियत तो ऐसी हैं जोकि लंबे अरसे से पर्दे के पीछे काम में जुटी रही। वे दिन रात काम में लगे थे, लेकिन कभी सामने नहीं आए।

किसी ने नौकरी छोड़ी तो कोई के परिवार के सभी काम छोड़ सरस्वती नदी को पुनर्जीवित करने में जुट गया। इन सबकी बदौलत ही अब उम्मीद जगी है कि महाभारत काल में लुप्त हुई सरस्वती नदी पुनर्जीवित हो जाएगी। यहां तक पहुंचने के लिए कई दफा मायूसी भी हाथ ली, लोगों ने भी तरह तरह के कटाक्ष किए। मगर उन्होंने कटाक्षों की परवाह किए बिना अर्जुन की मंजिल पर निगाह रखी। कामयाबी के लिए 200 से ज्यादा पत्र सरकार और अधिकारियों को लिखे।

हीरोज ऑफ द जर्नी

प्रशांत भारद्वाज : सरस्वती नदी को पुनर्जीवित करने के लिए सरस्वती शोध संस्थान से 2008 में दिल्ली के प्रशांत भारद्वाज टेक्निकल सलाहकार के रूप में जुड़े। हरियाणा सरकार और दिल्ली को जितनी भी प्रोजेक्ट रिपोर्ट दी गई उन्हें भारद्वाज ने सिरे चढ़ाया है। सरस्वती हैरिटेज डेवलेपमेंट बोर्ड के गठन में भी इनका सहयोग रहा।

प्रशांत भारद्वाज

डॉ. कल्याण रमन

डॉक्टर कल्याण रमन : चेन्नई के डॉक्टर कल्याण रमन 1989 से सरस्वती नदी को पुनर्जीवित करने के लिए जुटे हुए हैं। इन्होंने इसके लिए अपनी नौकरी तक छोड़ दी। 1987 में इनकी मुलाकात उज्जैन के शोधकर्ता डॉक्टर पद्मश्री डब्ल्यूएस वाकंकर से हुई थी। तभी इन्होंने काम शुरू कर दिया था सरस्वती के लिए। इन्होंने सरस्वती नदी पर 1100 पेज का इनसाइकलोपीडिया तैयार किया।

डॉक्टर एमआर राव : हैदराबाद स्थित ओएनजीसी के हेड डॉक्टर एमआर राव को 2006 में सरस्वती प्रोजेक्ट का हेड बनाया गया। इन्हें जैसलमेर में काम करने की जिम्मेदारी दी गई। 2008 में हरियाणा सरकार से सरस्वती को पुनर्जीवित करने के लिए जो एग्रीमेंट हुआ था। इसमें इनकी बड़ी भूमिका थी।

वीएमके पुरी : हिमाचल के रहने वाले वीएमके पुरी जियोलॉजीकल सर्वे ऑफ इंडिया में डायरेक्टर थे। 2000 में वे आदिबद्री उद्गम स्थल पर आए थे। यहां पर पड़े पत्थरों की शोध कर उन्होंने कहा था ये पत्थर तो हिमालय के हैं। इस संबंध में चार पेज की रिपोर्ट भी दी। इसके बाद इन्होंने काम किया और वे शोध संस्थान से जुड़ गए थे।

वीएमके पुरी

बीबी मित्तल : कुरुक्षेत्र निवासी बीबी मित्तल सिंचाई विभाग से एक्सईएन रिटायर हैं। कुरुक्षेत्र में 2010 में सरस्वती नदी की खुदाई हुई थी, यह मित्तल की ही बदौलत थी। इसके बाद इन्होंने यमुनानगर में खुदाई के लिए गाइड लाइन बनाई।

बीबी मित्तल

डॉ. एआर चौधरी : 2008 में कलायत में जमीन से पानी बहने लगा। जांच के लिए केयूके के जियोलॉजी विभाग के चेयरमैन डॉ. एआर चौधरी पहुंचे थे। इनके शोध में सामने आया था कि यह पानी ग्लेशियर का था। जो जमीन के नीचे बह रही सरस्वती नदी के रास्ते यहां पहुंचा है।

डॉ. एआर चौधरी

वैभव गर्ग : शोध संस्थान के सचिव पेशे से सिविल इंजीनियर हैं। सरस्वती को पुनर्जीवित करने के लिए सिविल के साथ-साथ आफिस के काम इनके जिम्मे थे। संस्थान के साथ वे 15 साल से जुड़े हुए हैं। अधिकारियों के साथ मीटिंग व अन्य काम भी गर्ग ही देखते हैं।

वैभव गर्ग

डॉ. विनीत जैन

डॉक्टर विनीत जैन : यमुनानगर के डॉक्टर विनीत जैन ने आईआईटी रुड़की से हाईड्रोलाजिकल में पीएचडी की। इनकी पीएचडी सरस्वती को धरा पर लाने के काम आई। इन्होंने सरस्वती पर रिसर्च किया और पाया कि सरस्वती नदी को धरा पर लाया जा सकता है।

दर्शनलाल जैन : सरस्वती शोध संस्थान के चेयरमैन 88 वर्षीय दर्शन लाल जैन ने डॉ. पद्मश्री डब्ल्यूएस वाकंकर की मौत के बाद 1999 में सरस्वती शोध के लिए काम शुरू किया। उस समय के तत्कालीन डीसी विजेंद्र सिंह ने सरस्वती को धरा पर लाने के बारे में चर्चा की। यमुनानगर का रेवन्यू रिकॉर्ड निकाल कर इस पर काम शुरू कर दिया। वीएमके पुरी, प्रशांत भारद्वाज, डॉ. कल्याण रमन, डॉक्टर एमके राव, बीबी मित्तल, डॉ. एआर चौधरी और वैभव गर्ग को एक प्लेटफार्म पर लाने वाले दर्शन लाल जैन ही थे।

दर्शन लाल जैन